'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में पिछडी जातियों की राजनीतिक स्थिति ।

डॉ. प्रा. भारमल पी. कणबी
(एसो. प्रोफ़सर)
श्री यु.एव.चौधरी आर्ट्स कोलेज, वडगाम
जि.बनासकांठा

भूमिका :

पिछडी जातियों के लोग खासकर के जंगलों में रहते हैं। इसलिए अन्य समाज से उनका सबंध दूर का ही हैं। उनका व्यवसाय भी निश्चित् नहीं हैं। वे ज्यादातर अपराधिक गतिविधियों से जुडे होने के कारण सक्रिय राजनीति में उनका कोई स्थान नहीं। राजनीति तो स्थायी लोगों का काम हैं, बल्कि यह तो धुमंतू हैं। सभ्य समाज के लोग उन्हें लेकर राजनीति जरुर कर लेते हैं। स्वतंत्रता के बाद आरक्षण की वजह से थोडा बहुत राजनीति में उनका स्थान दिखाई देता हैं। लेकिन फ़िर भी नहीं के बराबर हैं। निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 'अल्माकबूतरी' उपन्यास में पिछडी जातियाँ की राजनीतिक स्थिति का वर्णन हैं।

पिछडी जातियाँ और जातिय राजनीति । :

अंग्रेजोंने अपराधी जनजाति अधिनियम बनाकर इनको जन्म से ही अपराधी करार दिया गया था। स्वतंत्रता के बाद पिछडी जातियाँ के विकास के लिए प्रयास किया गया हैं। राजनीति में पिछडी जातियाँ हिस्सा तो नहीं लेती हैं। लेकिन इनका वोट प्राप्त करने के लिए सभ्य समाज के नेता हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं। कबूतरा जनजाति के राणा को मास्टर स्कूल में भर्ती करना नहीं चाहता हैं। गाँव का आदमी आकर मास्टर को समझाने की कोशिश करता हैं। तब ''मास्टर जीरह करता रहा कि तुम इस बच्चे को नहीं, कबूतरा-वोटों की सोच रहे हो। चुनाव आनेवाले हैं, सो हमदर्दी के सोते फ़ूट निकले हैं।''[१] एक बच्चे को स्कूल में दाखिल करने के लिए भी जातिय राजनीति आडे आती हैं। वोट के बारे में सोचा जाता हैं, उस बच्चे के भविष्य के बारे में नहीं सोचा जाता।

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास का कबूतरा वीरसिंह राजा का भाषण सुनने झांसी जाता हैं, राजा (पं.नेहरु) कटने लगे, ''अब वे घुमंतू लोग भी आजाद हैं, जो मुजरिमों के खाते में डाल रखे थे। वह कानून तोड दिया जो इंसान का दुश्मन था। उन लोगों को वही हक दिया जाएगा, जो देश के किसीभी आमआदमी को दिया जाता हैं।''[२] राजा की बात सुनकर वीरसिंह सेना में भर्ती होनेगया और पकडा गया। अपनी जाति कबूतरा लिखते ही कान पकडकर उसे बाहर निकाल दिया। जाति की वजह से उन्हें राजनीति का शिकार होना पडा। राजा की बात सुनकर चोरी का काम छाडकर नौकरी करने का प्रयास

असफ़ल हो गया। आजादी के बाद भी जातिय राजनीतिने पिछडी जातियाँ को सुधरने का मौका नहीं दिया।

पिछडी जातियाँ और जात पंचायत । :

पिछडी जातियाँ की अपनी कानून व्यवस्था होती हैं। इसे जात पंचायत कहा जाता हैं। जात पंचायत अपने समाज में कानून व्यवस्था बनाए रखने का प्रयास करती हैं। जात पंचायतके अलग-अलग स्तर होते हैं। पहली पंचायत अपने कबीले की होती हैं। इस पंचायत में न्याय न मिले तो पाँच-सात कबीले मिलाकर बनी हुई एक बडी जात पंचायत होती हैं। वहाँ पर न्याय के लिए गुहार लगायी जाती हैं। अगर किसीने कोई भी अपराध किया तो जात पंचायत बुलायी जाती हैं। पंचायत का मुखिया सजा सुनाता हैं। यह फ़सला मानने के लिए सभी जाति के लोग बाध्य होते हैं।

उपन्यास का राणा चौरी करने के लिए नहीं जाता हैं। माँ कदमबाईने अनेक प्रयास किए फ़िर भी वह नहीं मानता हैं। बस्ती के लोगोने भी समझाने का प्रयास किया लेकिन राणा चोरी करने नहीं जाता। तब पंचायत बुलायी जाती हैं। जात पंचायत का मुखिया सरमन फ़सला सुनाता है कि - ''राणाने बिरादरी को न हीं कबूतरा धरम को धोखा दिया है।अपने हठ के चलते विरासत पर लात मार रहा हैं। हजारों का नुकशान.. कदमबाई जिंदगी बेगार करे, तब भी भरपाई होगी ? अब इतना ही कि महीने में तीस दिन के हिसाब से हर डेरे को दारु बनाने का जो एक दिन मिलता हैं, वह-कदमबाई को नहीं मिलेगा।''[३] जात पंचायत के इस फ़सलेने कदमबाई के रोजी-रोटी का जरिया ही छिन लिया। अब वह चोरियाँ और जंगल में शिकार करनें पर मजबूर हो गई।

पिछडी जातियाँ और कायदे–कानून :

समाज के शिक्षित लोग और न्याय के रखवाले इन लोगों के अज्ञान का फ़ायदा उठाते हैं। यह लोग समाज में शिक्षा का अभाव होने के कारण कानून एवं न्याय प्रक्रिया को समझ नहीं पाते। एक बार भूरी के भाई को पुलीस डकैती के नाम पर गिरफ़्तार करती हैं। उसका भाई अपराधी नहीं था। इसलिए भूरी का पति वीरसिंह हाथ में कागज पकडकर पढे-लिखों के पीछे भागता हैं। अर्जी लिखवाकर बेकसूर साबित कराना चाहता था। ''पर विद्वानने ऐसे आखर कादे कि मामला उलट गया। फ़िर क्या था, कचहरी के दरवाजे पर वीरसिंह बादलों की तरह गडगडाया कि इजलास के भीत-पंक्खे कटने लगें।''[४] चिखने चिल्लाने के बाद भी वीरसिंह को न्याय नहीं मिला। इस अन्याय का बदला लेने के लिए भूरीने अपने बेटे रामसिंह को पढाने का फ़सला लिया। पिछडी जाति के विकास के लिए सरकार से रामसिंह अपेक्षा रखता हैं। उसे दु:ख होता है कि कोई प्रयास नहीं हो रहे हैं। रामसिंह कबूतराने अपनी कापी में प्रधानमंत्री के भाषण की पंक्तिया उतारी हैं। रामसिंह कबूतरा सभ्य समाज के कानून के द्वारा इन पिछडे जातियों के लोगो के लिए न्याय चाहता हैं।

पिछडी जातियाँ और पुलिस का शोषण ।

कबूतरा जनजाति के पुरुष चोरी कर या अन्य अपराध करके जंगल में भाग जाते हैं और औरते डेरे पर पुलिस के अत्याचार से त्रस्त होती हैं। कबूतरा लोग गेरकानुनी काम करने के कारण पुलिस के साथ इनकी मुठजोड होती हैं। औरतें भी शराब की भट्टियाँ चलाती हैं। पुलिस छापा मारते हैं। कबूतरा औरतों को पकडते हैं। कबूतरा पुलिस के पैर पकडते हैं। पुलिस औरतों का शोषण करते हैं। यह है स्वतंत्र भारत की पुलिस जो एक गर्भवती महिला पर भी अत्याचार करने के लिए आगे बढती हैं। आज अशिक्षित पिछडे लोगों पर पुलिस अत्याचार करती हैं। सरमन की गर्भवती औरत गेहूँ के खेत में जाकर छिप जाती हैं। लेकिन पुलिसवाला उसके पीछे-पीछे गया और उसकी जोंधो में डंडा घुसाने लगा। वह चिखने लगी तो पुलिसवाला गालियों सुनाने लगा।

भूरी को जब जात पंचायतने सजा सुनाई और उसे सजा देने के लिए जातपंचायतवाले लेकर जा रहे थे। तब पुलिस को देखकर वे तो भाग जाते हैं। एक असहाय स्त्री पुलिस के हाथ में आती हैं। यहाँ पुलिस का कर्तव्य उस स्त्री को सुरक्षा प्रदान करना था, पुलिसने उसे सुरक्षा तो प्रदान नहीं की, बल्कि उसका शारीरिक शोषण किया। ''पुलिसिया ! लहँगा उठाने के बदले जिंदगी दे गए। भूरी कृतज्ञ-सी उठकर बैठ गई।''[५]

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में एक प्रसंग आता है कि बेटासिंह डाकू दारोगा से मिलने रामसिंह के घर पर आया, दारोगा से कहता हैं, ''ईमानदारी की बात करते हैं हम । तुम मुडभेड दिखाओ। बेटासिंह को मरवाओ। ईनाम की रकम आधी-आधी रही। एक दिन में एक लाख। नौकर पेशा आदमी लाख का सपना देखता हैं, लाख नहीं देख पाता।''[६]

पिछडी जातियाँ और भ्रष्टाचार :

भ्रष्टाचारी लोग पिछडी जातियाँ को भी नहीं छोडते हैं। खास करके पिछडी जातियों के लोगो को भ्रष्टाचार का अवसर नहीं मिलते। कबूतरा जनजाति का व्यवसाय गेरकानुनी होने के कारण पुलिस उनकी बस्ती पर हमला करती हैं। उन्हे पकडकर रिश्वत लेकर छोडते हैं। दारोगा हमले का कारण सरमन मुखिया को समझाता हैं। दारोगा की बात मानकर सरमन मुखिया कबूतरा जाति के लोगो को कहता हैं, ''भाँतू रे... पाँच हजार का हक्ता लगेगा. मौज से दारु बेचो। दस हजार दो, चोरी और लूटपाट करो। बीस हजार पर डकैती का सुभीता देती है पुलिस मिलीभगत को कितने ही संयोग हैं।''[७] दारोगाने सरमन मुखिया को बुलाकर रिश्वत का हक्ता कायम किया। पुलिस हक्ता लेने लगी और कबूतरा खुलेआम अपराध करने लग।

पिछडी जातियाँ और अपराधिक गतिविधियाँ :

जंगल में रहनेवाले पिछडी जातियाँ के लोग वैसे कोई भी जन्म से अपराधी नहीं होता हैं । परिस्थितियाँ उसे अपराधी बनाती हैं। स्वतंत्रता के बाद राजनेताओंने इन लोगों में परिवर्तन करने का प्रयास किया गया। इस उपन्यास के कबूतरा जाति भी ऐसी ही एक जनजाति हैं, जिन का पेशा ही चोरी माना जाता हैं। चोरी अथवा अन्य गेरकानूनी काम जैसे-शराब बनाना और बेचना, डकैती करना आदि काम कबूतरा करते हैं। अपराधिक गतिविधियों को अंजाम देते समय उन्हे बुरा नहीं लगता हैं, बल्कि व अपने वीर-देवता का आशीर्वाद मानते हैं।

उपन्यास का जंगलिया चोरी करने में माहिर था। उसके करतब देखकर ही कदमबाई के पिताने उससे अपनी बेटी का विवाह तय किया था। कबूतरा चोरी को पाप नहीं मानते हैं। उनके लिए वह गौरव की बात हैं। कदमबाई को सपना आता है कि उसके बेटे राणाने चोरी की हैं, और रिवाज के अनुसार सरमन मुखिया के पास रुपये-गहने दिये हैं। ''सरमन मुखियाने नए चोर को पाँच रुपए इनाम दिए और पीठ ठोकी। डेरे पर राणा ही राणा छाया हुआ हैं।''[८] चोरी करने में पाप या अपराध का बोध नहों हैं । राणा जब चोरी करने से मना करता है तब उसकी माँ कदमबाई राणा को पीटते हुए कहती हैं. भीखम तीन बार जेल हो आया। गोमता तीन घडी और तीन साइकिल चुरा चुका हैं। बेटा चोरी में सफ़ल नहीं हो रहा हैं, इस बात को लेकर माँ को चिंता होती हैं। सभ्य समाज में बेटा चोर निकला तो कलंक माना जाता हैं। कबूतरा चोरी नहीं करता तो कलंक माना जाता हैं। कदमबाई बेटे को कहती हैं,

''बेटा, अभी कुछ नहीं बिगडा, भैसे खोलने का हुनर सीख । सगाई-संबंधवाले भी ऐसी कलाकारी सुनकर ही रुपते हैं।''[९] इस तरह अपराध करने के लिए माँ प्रेरित कर रही हैं। भारत आजाद होने के वर्षो बाद भी इन अपराधी जनजातियाँ में कोई सामाजिक परिवर्तन एवं राजनीतिक दृष्टि से सुधार कम ही दिखाई देते हैं।

संदर्भ पुस्तक :

१. मैत्रेयी पुष्पा - अल्मा कबूतरी
२. डॉ. रेणुका - नारी विमर्श की नयी दिशाएँ
३. डॉ. व्यंकटेश पाटिल - मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन।

संदर्भ :

१. मैत्रेयी पुष्पा - अल्मा कबूतरी, पृ.सं. ७९
२. वही, पृ.सं. ७३
३. वही, पृ.सं. ६५
४. वही, पृ.सं. ७४
५. वही, पृ.सं. ७६
६. वही, पृ.सं. १९२
७. वही, पृ.सं. ५५
८. वही, पृ.सं. ५९
९. वही, पृ.सं. ६२